B.A I Hons. भारतीय दर्शन
I Paper

बुद्ध - द्वितीय आर्य सत्य (The second Noble Truth)

दुःख के अस्तित्व को सभी धर्मों में किसी न किसी
रूप में माना है, परन्तु जहाँ तक दुःख के कारण का
सम्बन्ध है सभी धर्मों के बीच एक मत नहीं है।
यहाँ प्रत्येक दार्शनिक विश्व को दुःखमय जानकर
दुःख के कारण को जानने का प्रयास करता है।
महात्मा बुद्ध दुःख के कारण का विश्लेषण दूसरे
आर्य सत्य में एक सिद्धान्त के सहारे किया है। उस
सिद्धान्त को संक्षेप में प्रतीत्यसमुत्पाद कहा जाता
है। जब हम प्रतीत्यसमुत्पाद का विश्लेषण करते हैं
तब पाते हैं कि वे दो शब्दों के योग से बना है प्रतीत्य
और समुत्पाद। प्रतीत्य का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित
होने पर और समुत्पाद का अर्थ है किसी अन्य वस्तु
की उत्पत्ति इसलिए इसका शाब्दिक अर्थ है एक
वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की
उत्पत्ति। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त कार्य-
कारण सिद्धान्त पर आधारित है। यह प्रमाणित करता है
कि प्रत्येक कार्य अपने कारण पर आश्रित है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के ~~अर्थ~~ अनुसार प्रत्येक
घटना का कुछ न कुछ कारण होता है। कोई भी
घटना अकारण उपस्थित नहीं होता है। दुःख एक
घटना है। बौद्ध दर्शन में दुःख को जरामरण कहा है।
जरा का अर्थ वृद्धावस्था और मरण का अर्थ मृत्यु
होता है। जरामरण संसार के समस्त दुःख जैसे रोग,
निराशा, शोक, उदासी, इत्यादि का प्रतीक है।
जरा मरण का कारण बुद्ध के अनुसार

जाति है (Rebirth) जन्म ग्रहण करना ही जाति कहा जाता है। जब मानव शरीर धारण नहीं करेगा। तब उसे सांसारिक दुःख का सामना नहीं करना होगा।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार जाति का कारण भव है मानव को इसलिए जन्म ग्रहण करना पड़ता है कि उसमें जन्म ग्रहण करने की प्रवृत्ति विद्यमान है। जन्म ग्रहण करने की प्रवृत्ति को भव कहते हैं।

भव का कारण उपादान है। सांसारिक वस्तुओं से आसक्त रहने की चाह को उपादान कहा जाता है। उपादान का कारण तृष्णा है। शब्द, स्पर्श, रूप इत्यादि विषयों के भोग की वासना को तृष्णा कहते हैं। तृष्णा के कारण ही मनुष्य सांसारिक विषयों के पीछे अन्धा होकर दौड़ता है। तृष्णा का कारण वेदना है। पूर्व-इन्द्रियानुभूति को वेदना कहा जाता है। इन्द्रियों के द्वारा मानव को सुखात्मक अनुभूति होती है जो उसकी तृष्णाओं को जीवित रखती है। वेदना का कारण स्पर्श है। इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ जो सम्पर्क होता है उसे स्पर्श कहा जाता है। यदि इन्द्रियों का विषयों के साथ सम्पर्क नहीं हो तब इन्द्रियानुभूति अर्थात् वेदना का उदय नहीं होगा। स्पर्श का कारण षडायतन है। पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ और मन के संकलन को षडायतन कहते हैं। क्योंकि इन्द्रियाँ ही विषयों के साथ सम्पर्क ग्रहण करती हैं। षडायतन का कारण नाम-रूप है। मन और शरीर के समूह को नाम-रूप कहा जाता है। इन्द्रियों का निवास मन एवं शरीर में सन्निहित होता है- यदि नाम-रूप का अस्तित्व नहीं रहता तो षडिन्द्रिया

का प्रादुर्भाव नहीं होता।
नामरूप का कारण विज्ञान है। मनुष्य जब माता-
ओं के गर्भ में रहता है तो विज्ञान के कारण ही विकसित
होता है यदि गर्भावस्था में विज्ञान का अभाव होता
तो शिशु के शरीर एवं मन का विकास रुक जाता।
विज्ञान का कारण संस्कार है। संस्कार का अर्थ है
स्वचालित करना। अतीत जीवन के कर्मों के प्रभाव के
कारण ही संस्कार निर्मित होते हैं। इसलिए संस्कार
का कारण अविद्या है। अविद्या का अर्थ है
ज्ञान का अभाव। जो वस्तु अवास्तविक है उसको
वास्तविक समझना। दुःख मय है उसे सुखमय
समझना। वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को नहीं जानने
के कारण अविद्या प्रभावित होकर संस्कार का
निर्माण करती है। अविद्या ही समस्त दुःखों का
मूल कारण है। गौतम बुद्ध ने दुःखों का मूल कारण
अविद्या को मानकर भारत के दार्शनिकों की
परम्परा का पालन किया है।

सांख्य, न्याय, वैशेषिक, शंकर और जैन आदि
दार्शनिकों ने दुःख का मूल कारण अविद्या को माना
है प्रतीत्य समुत्पाद को द्वादश निदान भी कहा जाता है
यह सिद्धांत दुःख के कारण का पता लगाने के लिए
बारह कड़ियों का विवेचन किया है

(1) अविद्या (2) संस्कार (3) विज्ञान (4) नाम रूप
(5) षडायतन (6) स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा
(9) उपादान (10) भव (11) जाति (12) जरामरण

प्रतीत्यसमुत्पाद को मध्यम मार्ग भी कहा जाता है क्योंकि
यह मार्ग का स्थान ग्रहण करता है किन्तु मत है कि प्रतीत्यसमुत्पाद
का [illegible] यह प्रतीत्य